अणुव्रत आन्दोलन का 61वां स्थापना दिवस (शिविर)

वर्तमान में प्रासंगिक धर्म है अणुव्रत

– आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 1 मार्च, 2009

''अर्थ में लिप्त और भोग में लिप्त व्यक्ति नैतिकता को स्वीकार करे अणुव्रत को स्वीकार करे बहुत कठिन काम है और यह कठिन नहीं होता तो आज बाजार भी शुद्ध होता व्यापार भी शुद्ध होता, राजनीतिक वातावरण भी शुद्ध होता अपराध हिंसा और भ्रष्टाचार जैसे शब्द आकाश में नहीं चलते, सितारे बनकर नहीं चमकते। जो व्यक्ति तट पर आ गया उसके लिए इतना कठिन नहीं है वह आगे बढ़ सकता है, किंतु जो दलदल में फंसा हुआ है उसके लिए चलना कठिन है, दलदल से निकलना भी मुश्किल है तो यह अर्थ और भोग का ऐसा दलदल आज भी पहले से ज्यादा भयंकर बना हुआ है। उससे निकलकर कोई अणुव्रती बनता है तो घोर तपस्या मानता हूं।''

उक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत के 61वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्ति किये।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जो व्यक्ति अणुव्रत, नैतिकता को स्वीकार करता है और अर्थ अर्जन में वह अनैतिकता का व्यवहार नहीं करता, क्रूरता का व्यवहार नहीं करता। इन व्रतों को स्वीकार करता है तो वह महाव्रत को स्वीकार करता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी के संस्मरणों को रेखांकित करते हुए कहा कि अणुव्रत एक दूरदर्शिता का परिणाम है कि आचार्य तुलसी ने भविष्य को देखा और चिंतन किया की देश की आजादी के साथ-साथ सब सत्ता और धन का खेल होने वाला है तो कोई मार्गदर्शक तत्व चाहिए। इस लंबे चिंतन के बाद अणुव्रत का प्रारंभ किया गया और इसके प्रारंभ में पता नहीं कितने लोगों का चिंतन साथ में रहा और प्रारंभ में कार्यकर्त्ता भाई देवेन्द्र कर्णावट जिसने सारा जीवन लगाकर अणुव्रत के लिए काम किया। प्रारंभ में अणुव्रत को पल्लवित करने वाले लोग सुगनचन्दजी आंचलिया, जयचन्दलाल दफ्तरी, रावतमलजी सुराणा, मोहनलालजी कठोतिया, गोपीनाथ अमन, यशपाल जैन आदि-आदि अनेक लोग थे कि जिन्होंने इस अनैतिकता के वातावर में भी नैतिकता के गिरने को अभिसिक्त करने का प्रयत्न किया। कार्यकर्त्ता के रूप में देखता हूं तो छगनलाल शास्त्री मेरे सामने है। इन्होंने अणुव्रत का बहुत बड़ा काम किया कार्यकर्त्ता के रूप में बड़ा काम किया। जिन लोगों ने महाव्रत को सींचा उसकी विस्मृति न हो। साठ वर्ष पहले का तेरापंथ और आज का तेरापंथ इतना अंतर आया है कि साठ वर्ष पहले स्थिति यह थी कि जैनों में भी तीन संप्रदाय माने जाते थे। दिगम्बर, श्वेताम्बर और मूर्तिपूजक। तेरापंथ का कोई नाम नहीं। दूसरे अजैन लोग भी कम जानते थे कोई परिचय नहीं था। अणुव्रत एक ऐसा माध्यम बना जिसने प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू को प्रभावित किया और वे हमारे सहभागी बन गए। पण्डित नेहरू को प्रभावित किया वे भी काफी रूचि लेने लग गए। लालबहादूर शास्त्री ऐसे अनेक लोगों ने काम किया।

पूज्य आचार्य प्रवर ने फरमाया कि वर्तमान वातवावरण में सबसे प्रासंगिक धर्म है तो वह है अणुव्रत। क्योंकि आज की जो समस्या है उसका समाधान कोई संप्रदाय नहीं दे सकता। किंतु अणुव्रत पूरे विश्व की समस्या का समाधान दे सकता है इसलिए सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। सभी लोग इस पर गहराई से चिंतन करें और एक ऐसी नैतिक मूल्यों के विकास की योजना बनाएं जिससे समाज का दृष्टिकोण सही बन जाए।

इस अवसर पर प्रवास समिति बीदासर के अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. जी. एल. नाहर, डॉ. एस.एल. गांधी, श्री राजेन्द्र सेठिया, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, डॉ. छगनलाल शास्त्री, श्री मगन जैन आदि ने विशेष रूप से उपस्थित होकर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का प्रारंभ मुनि नीरज कुमारजी

के गीत से हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

इस अवसर पर डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने ''अणुव्रत महारथी देवेन्द्र कर्णावट'' ग्रंथ आचार्य महाप्रज्ञ को लोकार्पण हेतु भेंट किया।

इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष जसराज बुरड़ ने आए हुए अणुव्रत संभागियों को ''तुलसी विचार दर्शन'' की 100 पुस्तकें भेंट की।

दीक्षा समारोह का आयोजन

तेरापंथ भवन स्थित श्रीमद् मघवा समवसरण में आयोजित दीक्षा समारोह में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में युवाचार्य श्री महाश्रमण ने पूर्व नाम बजरंग को मंगल मंत्रोच्चार के साथ केश लूंचन कर दीक्षा प्रदान की। युवाचार्य श्री महाश्रमण ने दीक्षित मुनि का नया नाम मुनि विनयरूचि रखते हुए रजोहरण एवं प्रमार्जनी प्रदान कराई। इससे पूर्व दीक्षित मुनि के पारिवारिकजनों ने लिखित एवं मौखिक स्वीऔति दी। लिखित आज्ञा पत्र का वाचन पारमार्थिक शिक्षण संस्था के उपाध्यक्ष कन्हैयालाल छाजेड़ ने किया।

– अशोक सियोल

99829 03770